IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709

THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

IGNOU

बीसीओसी-133

(हिन्दी माध्यम)

IMPORTANT

QUESTION ANSWER

GUESS PAPER / EXAM NOTES

From Previous Year Papers

FOR MORE PDF-9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 60 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

प्रत्येक 500-700 शब्द

प्रश्न - (क) "अनुबंध का कानून न तो समझौतों का संपूर्ण कानून है और न ही यह दायित्वों का संपूर्ण कानून है।" चर्चा करें।

उत्तर- यह कथन मात्र संविदात्मक ढांचे से परे कानूनी दायित्वों और समझौतों के सूक्ष्म परिदृश्य को सटीक रूप से दर्शाता है। जबकि अनुबंध कानून समझौतों के एक महत्वपूर्ण हिस्से को नियंत्रित करता है, यह उन दायित्वों की संपूर्णता को शामिल करने में विफल रहता है जो व्यक्ति या संस्थाएँ ले सकती हैं।

सबसे पहले, कई दायित्व अनुबंधों से स्वतंत्र रूप से उत्पन्न होते हैं। ये दायित्व विभिन्न कानूनी स्रोतों से उत्पन्न होते हैं जैसे कि टोर्ट कानून, जो गलत कार्यों से उत्पन्न होने वाले नागरिक गलतियों और देनदारियों से निपटता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति लापरवाही से किसी अन्य को नुकसान पहुंचाता है, तो घायल पक्ष अनुबंध संबंधी संबंध के अस्तित्व की परवाह किए बिना टोर्ट कानून के तहत सहारा ले सकता है। इसी तरह, विनियमों या कानूनों द्वारा लगाए गए वैधानिक दायित्व अनुबंध संबंधी व्यवस्थाओं के बावजूद कुछ व्यवहार या जिम्मेदारियों को निर्धारित कर सकते हैं।

दूसरे, ऐसे समझौते हैं जो अनुबंध के रूप में योग्य नहीं हैं लेकिन फिर भी कानूनी दायित्व बनाते हैं। अनुबंधों में कानूनी संबंध बनाने के लिए प्रस्ताव, स्वीकृति, विचार और इरादे जैसे कुछ तत्वों की आवश्यकता होती है। हालाँकि, सभी समझौते इन मानदंडों को पूरा नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, कानूनी संबंध बनाने के लिए आवश्यक इरादे के बिना किए गए समझौते, जैसे कि सामाजिक या घरेलू समझौते, अनुबंध के रूप में लागू नहीं हो सकते हैं लेकिन फिर भी नैतिक या सामाजिक दायित्व शामिल हो सकते हैं।

इसके अलावा, न्यायसंगत दायित्वों का दायरा अनुबंध कानून के सख्त नियमों से परे एक और आयाम जोड़ता है। प्रॉमिसरी एस्टॉपेल जैसे न्यायसंगत सिद्धांत औपचारिक अनुबंध की अनुपस्थिति में भी दायित्व बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि पार्टी ए पार्टी बी से कोई वादा करती है, जो अपने नुकसान के लिए उस वादे पर निर्भर करता है, तो औपचारिक अनुबंध की अनुपस्थिति के बावजूद, इक्विटी वादे को लागू करने के लिए हस्तक्षेप कर सकती है।

इसके अलावा, नैतिक और नैतिक दायित्व भी हैं जो कानूनी ढांचे से परे हैं। हालांकि कानून की अदालत में लागू नहीं किए जा सकते, लेकिन ये दायित्व अक्सर पारस्परिक संबंधों और व्यावसायिक प्रथाओं को निर्देशित करते हैं, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

संक्षेप में, जबकि अनुबंध कानून कानूनी दायित्वों और समझौतों का एक महत्वपूर्ण घटक है, यह व्यापक स्पेक्ट्रम का केवल एक हिस्सा दर्शाता है। कानूनी दायित्व विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न हो सकते हैं और पारंपरिक संविदात्मक व्यवस्थाओं से परे विभिन्न रूप ले सकते हैं, जिसमें टोर्ट, क़ानून, न्यायसंगत सिद्धांत और यहां तक कि नैतिक विचार भी शामिल हैं। इस प्रकार, दायित्वों के कानून को समझने के लिए केवल अनुबंध कानून पर ध्यान केंद्रित करने की तुलना में एक व्यापक परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता होती है।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 60 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

(ख) 'क्रॉस ऑफर', 'स्टैंडिंग ऑफर' और 'जनरल ऑफर' को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर- क्रॉस ऑफर: क्रॉस ऑफर तब होता है जब दो पक्ष एक साथ एक दूसरे को समान ऑफर देते हैं, दूसरे पक्ष के ऑफर के बारे में अनजान होते हैं। इस परिदृश्य में, दोनों ऑफर को काउंटर ऑफर माना जाता है और जब तक एक पक्ष दूसरे के ऑफर को स्वीकार नहीं करता है, तब तक कोई बाध्यकारी अनुबंध नहीं बनता है । अनिवार्य रूप से, यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ दो व्यक्ति या संस्थाएँ दूसरे के ऑफर के बारे में पूर्व जानकारी के बिना एक दूसरे को समान शर्तें प्रस्तावित करते हैं।

उदाहरण: कल्पना करें कि दो व्यक्ति, ऐलिस और बॉब, ऑनलाइन एक जैसी पुरानी घड़ियाँ $500 में बेच रहे हैं। ऐलिस बॉब को एक ईमेल भेजती है जिसमें वह $500 में उसकी घड़ी खरीदने का इरादा जताती है। ऐलिस को पता नहीं होता कि बॉब भी उसी समय उसे ईमेल भेजता है, जिसमें वह अपनी घड़ी $500 में बेचने की पेशकश करता है। इस मामले में, ऐलिस और बॉब दोनों ने एक-दूसरे को क्रॉस ऑफर दिए हैं। चूँकि दोनों ऑफर एक जैसे हैं, इसलिए जब ऐलिस या बॉब में से कोई एक दूसरे के ऑफर को स्वीकार करता है, तो एक बाध्यकारी अनुबंध बनता है।

स्थायी प्रस्ताव: स्थायी प्रस्ताव, जिसे ओपन ऑफर या निरंतर प्रस्ताव के रूप में भी जाना जाता है, एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को निर्दिष्ट शर्तों पर अनुबंध में प्रवेश करने के लिए दिया गया प्रस्ताव है। किसी विशिष्ट प्रस्ताव के विपरीत, स्थायी प्रस्ताव एक निश्चित अवधि के लिए या जब तक इसे पेशकश करने वाले पक्ष द्वारा रद्द नहीं कर दिया जाता है, तब तक खुला रहता है। प्रस्ताव प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपनी वैधता अवधि के दौरान किसी भी समय स्थायी प्रस्ताव को स्वीकार कर सकता है, जिससे कानूनी रूप से बाध्यकारी अनुबंध बन जाता है।

उदाहरण: एक कंपनी अपनी वेबसाइट पर विज्ञापन देती है कि वह अगले महीने में किसी भी समय 200 डॉलर में इस्तेमाल किए गए स्मार्टफोन खरीदने को तैयार है। यह ऑफर उन सभी लोगों के लिए खुला है जो निर्दिष्ट समय सीमा के भीतर कंपनी को अपना इस्तेमाल किया हुआ स्मार्टफोन बेचना चाहते हैं । यदि कोई व्यक्ति महीने के भीतर कंपनी को अपना स्मार्टफोन 200 डॉलर में बेचने का फैसला करता है, तो कंपनी स्थायी प्रस्ताव की शर्तों के अनुसार लेनदेन को पूरा करने के लिए बाध्य है।

सामान्य प्रस्ताव: एक सामान्य प्रस्ताव आम जनता के लिए किया गया प्रस्ताव होता है, और जो कोई भी प्रस्ताव की शर्तों को पूरा करता है, वह इसे स्वीकार कर सकता है और प्रस्ताव देने वाले पक्ष के साथ अनुबंध कर सकता है। किसी विशिष्ट प्रस्ताव के विपरीत, एक सामान्य प्रस्ताव किसी विशेष व्यक्ति या समूह को लक्षित नहीं करता है, बल्कि इसे स्वीकार करने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए खुला होता है।

उदाहरण: खोए हुए पालतू जानवर को वापस लाने के लिए 500 डॉलर का इनाम देने का नोटिस सामुदायिक बुलेटिन बोर्ड, सोशल मीडिया और स्थानीय समाचार पत्रों पर पोस्ट किया जाता है। जो कोई भी पालतू जानवर को ढूंढता है और उसे मालिक को लौटाता है, वह इनाम का दावा कर सकता है। चूंकि यह ऑफर समुदाय में किसी के लिए भी खुला है, इसलिए इसे एक सामान्य ऑफर माना जाता है। अगर कोई पालतू जानवर को ढूंढता है और उसे वापस करता है, तो वह सामान्य ऑफर की शर्तों के अनुसार 500 डॉलर का इनाम पाने का हकदार है।

प्रश्न - (क) निम्नलिखित के बीच अंतर बताएं :

(i) जबरदस्ती और अनुचित प्रभाव

उत्तर- जबरदस्ती और अनुचित प्रभाव दो अलग-अलग कानूनी अवधारणाएँ हैं जो अनुबंधों में सहमति के मुद्दे से संबंधित हैं। जबरदस्ती का मतलब है किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध अनुबंध में प्रवेश करने के लिए मजबूर करने के लिए बल या धमकियों का उपयोग करना। इसमें शारीरिक नुकसान, धमकी या दबाव के अन्य रूप शामिल हो सकते हैं जो व्यक्ति को उसकी स्वतंत्र इच्छा से वंचित करते हैं। संक्षेप में, जबरदस्ती वास्तविक सहमति को नकारती है क्योंकि व्यक्ति स्वेच्छा से समझौते में प्रवेश नहीं कर रहा है।

FOR MORE PDF-9485943709

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 60 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

दूसरी ओर, अनुचित प्रभाव तब होता है जब एक पक्ष सत्ता या भरोसे की स्थिति का फ़ायदा उठाकर दूसरे पक्ष को अनुबंध में प्रवेश करने के लिए अनुचित तरीके से राजी करता है। जबरदस्ती के विपरीत, अनुचित प्रभाव में ज़रूरी नहीं कि धमकियाँ या बल प्रयोग शामिल हो, बल्कि इसमें चालाकीपूर्ण रणनीति शामिल होती है जो कमज़ोर स्थिति का फ़ायदा उठाती है। इसमें किसी व्यक्ति की भावनात्मक या मानसिक स्थिति का फ़ायदा उठाना या प्रभावित करने वाले पर उसकी निर्भरता शामिल हो सकती है।

संक्षेप में, जबकि जबरदस्ती में स्पष्ट धमकी या बल शामिल होता है, अनुचित प्रभाव किसी को सहमति में बदलने के लिए शक्ति या विश्वास के दुरुपयोग के इर्द-गिर्द घूमता है। दोनों ही अनुबंधों में सहमति की स्वैच्छिक प्रकृति को कमजोर करते हैं, लेकिन अलग-अलग तरीकों से।

(ii) धोखाधड़ी और गलत बयानी

उत्तर- धोखाधड़ी और गलत बयानी अलग-अलग कानूनी अवधारणाएँ हैं, फिर भी दोनों में अलग-अलग संदर्भों में धोखा शामिल है। धोखाधड़ी में आमतौर पर किसी अन्य पक्ष की कीमत पर किसी प्रकार का लाभ या फायदा पाने के लिए जानबूझकर धोखा देना या तथ्यों को जानबूझकर गलत तरीके से प्रस्तुत करना शामिल होता है। इसके लिए धोखा देने का इरादा , गलत बयान और धोखा खाने वाले पक्ष को नुकसान उठाना पड़ता है। धोखाधड़ी में वित्तीय धोखाधड़ी, पहचान धोखाधड़ी या बीमा धोखाधड़ी जैसे विभिन्न रूप शामिल हो सकते हैं, और अक्सर नागरिक देनदारियों या आपराधिक आरोपों सहित कानूनी परिणाम होते हैं।

दूसरी ओर, गलत बयानी एक व्यापक अवधारणा को संदर्भित करती है जिसमें झूठे बयान, चूक या भ्रामक आचरण शामिल होते हैं जो किसी अन्य पक्ष को अनुबंध या लेनदेन में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करते हैं। धोखाधड़ी के विपरीत, गलत बयानी में जरूरी नहीं कि धोखा देने का इरादा शामिल हो, लेकिन फिर भी एक पक्ष द्वारा गलत धारणा या गलतफहमी पैदा होती है, जिससे उन्हें ऐसा निर्णय लेना पड़ता है जो वे अन्यथा नहीं लेते। गलत बयानी मासूमियत से, लापरवाही से या धोखाधड़ी से हो सकती है, और परिस्थितियों और कानूनी अधिकार क्षेत्र के आधार पर उपचार में अनुबंध को रद्द करना, हर्जाना या विशिष्ट प्रदर्शन शामिल हो सकते हैं।

(ख) उन समझौतों की सूची उदाहरण सहित बनाइए जो सार्वजनिक नीति के विरोधी हैं।

उत्तर- सार्वजनिक नीति के विरुद्ध समझौते वे अनुबंध या व्यवस्थाएँ हैं जो सामाजिक मानदंडों, मूल्यों या कानूनी सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं, जिससे उन्हें न्यायालयों द्वारा लागू नहीं किया जा सकता। इन समझौतों में अक्सर ऐसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जिन्हें सार्वजनिक हित के लिए हानिकारक या स्थापित कानूनों के विपरीत माना जाता है। यहाँ समझौतों की कई श्रेणियाँ दी गई हैं जो आम तौर पर इस छत्र के अंतर्गत आती हैं, साथ ही उदाहरण भी दिए गए हैं:

1. **अवैध अनुबंध** : इनमें ऐसी गतिविधियाँ शामिल हैं जो कानून द्वारा स्पष्ट रूप से निषिद्ध हैं। उदाहरण के लिए, नशीली दवाओं की तस्करी से संबंधित अनुबंध, ऐसे क्षेत्राधिकारों में जुआ खेलना जहाँ यह अवैध है, या अपराध करने के लिए समझौते।
2. **अनैतिक अनुबंध** : ऐसे अनुबंध जिनमें सार्वजनिक नैतिकता या शालीनता के विपरीत कार्य शामिल होते हैं, उन्हें लागू नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए, वेश्यावृत्ति के लिए अनुबंध, व्यभिचार को बढ़ावा देने वाले अनुबंध, या अनैतिक व्यवहार के अन्य रूपों में शामिल होने के लिए अनुबंध।
3. **जनहित के विरुद्ध अनुबंध** : ऐसे अनुबंध जो जन कल्याण को नुकसान पहुंचाते हैं या सार्वजनिक नीति उद्देश्यों को कमजोर करते हैं, वे आम तौर पर लागू नहीं किए जा सकते। इस श्रेणी में वे अनुबंध शामिल हैं जो व्यापार को रोकते हैं, जैसे एकाधिकार समझौते, भेदभाव को बढ़ावा देने वाले अनुबंध या सार्वजनिक स्वास्थ्य या सुरक्षा की रक्षा के लिए बनाए गए नियमों को दरकिनार करने के उद्देश्य से किए गए अनुबंध।

FOR MORE PDF-9485943709

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 60 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

4. **अनुचित शर्तों वाले अनुबंध** : ये ऐसे अनुबंध हैं जो एक पक्ष को दूसरे पक्ष पर इस हद तक अनुचित रूप से लाभ पहुंचाते हैं कि यह अंतरात्मा को झकझोर देता है। उदाहरण के लिए, अत्यधिक ब्याज दरों वाले अनुबंध, सेवा की बेहद अनुचित शर्तों वाले अनुबंध, या ऐसे अनुबंध जो कमजोर व्यक्तियों का शोषण करते हैं।

5. **वैधानिक प्रावधानों के विरुद्ध अनुबंध** : ऐसे अनुबंध जो विशिष्ट वैधानिक प्रावधानों या विनियमों का उल्लंघन करते हैं, उन्हें लागू न करने योग्य माना जा सकता है। इसमें कर दायित्वों से बचने वाले अनुबंध, उपभोक्ता संरक्षण कानूनों का उल्लंघन करने वाले अनुबंध या पर्यावरण विनियमों का पालन करने में विफल रहने वाले अनुबंध शामिल हैं।

6. **कानूनी कार्यवाही को प्रतिबंधित करने वाले समझौते** : ऐसे अनुबंध जो किसी पक्ष की कानूनी सहायता तक पहुँच को सीमित करने या न्याय प्रशासन में बाधा डालने का प्रयास करते हैं, वे आम तौर पर लागू नहीं किए जा सकते। इसमें घोर लापरवाही के लिए देयता को माफ करने वाले अनुबंध या पक्षों को मुकदमा करने के अपने अधिकार को छोड़ने की आवश्यकता वाले अनुबंध शामिल हैं।

7. **सार्वजनिक नीति उद्देश्यों का उल्लंघन करने वाले अनुबंध** : ऐसे अनुबंध जो सीधे सार्वजनिक नीति उद्देश्यों का विरोध करते हैं या न्याय के मूल सिद्धांतों का उल्लंघन करते हैं, उन्हें लागू न करने योग्य माना जा सकता है। इसमें ऐसे अनुबंध शामिल हो सकते हैं जो गुलामी या मानव तस्करी को बढ़ावा देते हैं, ऐसे अनुबंध जो मौलिक मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हैं, या ऐसे अनुबंध जो प्रणालीगत भेदभाव को कायम रखते हैं।

न्यायालय आम तौर पर सार्वजनिक कल्याण की रक्षा, कानूनी अखंडता को बनाए रखने और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए इन श्रेणियों में आने वाले समझौतों को लागू करने से इनकार करते हैं। सार्वजनिक नीति के विरुद्ध समझौतों से बचने के लिए कानूनी आवश्यकताओं और नैतिक मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना अनुबंध में प्रवेश करने वाले पक्षों के लिए आवश्यक है।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT - HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905 OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - अनुबंध के उल्लंघन के लिए पीड़ित पक्ष को उपलब्ध उपायों पर चर्चा करें।

उत्तर- अनुबंध का उल्लंघन तब होता है जब कोई पक्ष बिना किसी वैध बहाने के अनुबंध की शर्तों के तहत अपने दायित्वों को पूरा करने में विफल रहता है। जब ऐसा उल्लंघन होता है, तो पीड़ित पक्ष के पास उल्लंघन के परिणामस्वरूप हुए नुकसान की भरपाई के लिए कई उपाय उपलब्ध होते हैं। इन उपायों का उद्देश्य उल्लंघन न करने वाले पक्ष को उस स्थिति में लाना है, जिसमें वे तब होते, जब अनुबंध को सहमति के अनुसार निष्पादित किया गया होता।

1. प्रतिपूरक क्षति: प्रतिपूरक क्षति को उल्लंघन के कारण पीड़ित पक्ष द्वारा झेले गए वास्तविक नुकसान को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन क्षतियों का उद्देश्य पीड़ित पक्ष को हुए वित्तीय नुकसान की भरपाई करना है, जिसमें प्रत्यक्ष नुकसान, खोया हुआ लाभ और उल्लंघन के परिणामस्वरूप होने वाली कोई भी लागत शामिल है। इसका उद्देश्य पीड़ित पक्ष को उस स्थिति में लाना है जिसमें वे तब होते यदि अनुबंध सही तरीके से निष्पादित किया गया होता।

2. दंडात्मक क्षति: कुछ मामलों में, दंडात्मक क्षति तब दी जा सकती है जब उल्लंघन घोर लापरवाही, दुर्भावना या धोखाधड़ी के इरादे से किया गया हो। प्रतिपूरक क्षति के विपरीत, दंडात्मक क्षति का उद्देश्य उल्लंघन करने वाले पक्ष को दंडित करना और उन्हें और अन्य लोगों को भविष्य में इसी तरह के आचरण में शामिल होने से रोकना है।

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources